इकाई 5 अरस्तू : राज्य और अच्छा जीवन (एन्डीमेनिया)*

संरचना

5.0 उद्देश्य
5.1 अरस्तू के जीवन की एक संक्षिप्त रूपरेखा
5.2 आकार
5.3 सद्‌गुण
5.4 राज्य तथा अच्छा जीवन
5.5 अरस्तू के राज्य तथा अच्छे जीवन की आलोचना
5.6 सारांश
5.7 कुछ उपयोगी संदर्भ
5.8 अपनी प्रगति जाँचें अभ्यासों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस अध्याय में, अरस्तू के जीवन की एक संक्षिप्त प्रस्तावना उस संदर्भ को समझने के लिए दी गई है जिसमें उसके राजनीतिक दर्शन का विकास हुआ। यह अध्याय गुरु और शिष्य,, अर्थात् प्लेटो और अरस्तू के बीच समाभिरूपता और असहमति के बिंदुओं की खोज करना है; अर्थात् प्लेटो और अरस्तू के बीच, आकार और पदार्थ के बीच संबंध को समझने के उनके उपागम में अभिसरण और विचलन के सूत्र ढूंढता है। इसके अतिरिक्त, यह इकाई यह स्पष्ट करती है कि अरस्तू ने एक राजनीतिक समुदाय में सद्‌गुण और उसकी प्रासंगिकता को कैसे समझा। अगला भाग अरस्तू के राज्य के सिद्धांत और अच्छे जीवन की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थी उस प्रसंग और मूलपाठ को समंझने की स्थिति में होंगे जिसमें अरस्तू की राज्य और अच्छे जीवन की अवधारणा विकसित हुई।

5.1 अरस्तू के जीवन की एक संक्षिप्त रूपरेखा

अरस्तू (लगभग 384 ई. पू. काल से 322 ई. पू. काल) एक प्राचीन यूनानी दार्शनिक और वैज्ञानिक था। उसका जन्म स्टेगीरा में हुआ, जो यूनान के उत्तरी तट पर एक छौटा कस्बा था। उसके पिता निकोमेकस मकदूनिया के शासक अभिन्तास द्वितीय के राजवैध थे। यद्यपिज ब निकोमेकस का देहान्त हुआ, तब अरस्तू केवल एक छोटा लड़का था, फिर भी वह अपने शेष जीवन के लिए मेसेडोनियम दरबार से निकटता से जुड़ा ही नहीं बल्कि

*डॉ. रश्मि गोपी, सहायक प्रोफेसर, मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रभावित भी रहा। उसकी माँ फाइस्टस के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। ऐसा माना जाता है कि उनका देहांत भी अरस्तू के बचपन में ही हो गया। अरस्तू के पिता के देहांत के बाद, एटरन्यूस का प्रॉक्सीनस, जिसका विवाह अरस्तू की बड़ी बहन एरिमनेस्ट से हुआ था, अरस्तू के बालिग होने तक, उसका अभिभावक रहा। जब अरस्तू 17 वर्ष की आयु का हुआ तो प्रॉक्सीनस वे उसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए एथेन्स भेजा। उस समय एथेन्स को विश्व का शैक्षिक केंद्र माना जाता था। एथेन्स में, अरस्तू ने यूनान के प्रमुख शिक्षण संस्थान, प्लेटो की अकादमी में दाखिला लिया और अपने आप को एक आदर्श विद्यार्थी के रूप में सिद्ध किया। अरस्तू ने, सुकरात के शिष्य, यूनानी दार्शनिक प्लेटो और उसकी अकादमी के साथ दो दशकों के लिए, 347 ई. पू. में प्लेटो की मृत्यु तक संबंध कायम रखा। मौजूद नहीं था और वह एक विदेशी ही रहा। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो इस बात के लिए प्रसिद्ध हुआ कि उसने इस पर बल दिया कि एक नागरिक की गतिविधियाँ, बारी से शासन करना और शासित होना, एक संतुष्ट व्यक्ति के लिए सर्वोत्तम जीवन था, जो स्वभाव से एक 'पोलिस' में जीने वाला प्राणी था, उसकी उस एथेन्स में, जहाँ उसने अध्यापन और निवास किया वहाँ एक विदेशी की स्थिति, कम से कम एक उल्लेखनीय विडंबना थी। अरस्तू के कई विचार प्लेटो की शिक्षाओं पर आलोचनात्मक चिंतन का परिणाम थे। अरस्तू के दृष्टिकोण ने उसी विश्व को देखने और समझने का एक और तरीका प्रस्तुत किया जो प्लेटो ने तय किया था। वह आगे चलकर, स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कुछ अन्य कारणों की खोज द्वारा जो अच्छाई के एक अकेले, अलग, उत्कृष्ट और एकीकृत आकार के मुकाबले में अधिक असंख्य, स्पष्ट और प्रदर्शन योग्य थे, उस तय विश्व के बरे में प्लेटो के कुछ स्पष्टीकरणों को अस्वीकार करने वाला था। इन दोनों दार्शनिकों के बीच इस अंतर को अक्सर रोम में स्थित दि वैटिकन में जाने वाले किसी दर्शक के उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है जो पुनर्जागरण काल चित्रकार रफाएल की मशहूर कलाकृति 'दि स्कूल ऑफ एथेन्स' की प्रशंसा कर पाता है। इस कलाकृति में, प्लेटो और अरस्तू की चर्चा करते हुए दिखाया गया है। प्लेटो आकाश की ओर इशारा करता हैं जबकि अरस्तू, अपने बाँए हाथ में अपनी पुस्तक 'एथिक्स' की एक प्रति लिए हुए, अपने दाएँ हाथ को अपने सामने बढ़ाता है और इस इशारे से ऐसा लगता है मानों वह प्लेटो के अनुभवातीत उत्साह को रोक भी रहा है और उसके सामने जो भौतिक जगत है, उसे सम्मिलित भी कर रहा है। चूंकि अरस्तू प्लेटो के कुछ दार्शनिक ग्रंथों से असहमत था, इसीलिए अरस्तू को अकादमी के निर्देशक का पद विरासत में, जैसे कि बहुतों ने कल्पना की थी, नहीं मिला।

प्लेटो के निधन के पश्चात, अरस्तू के मित्र हेमियास ने, जो मिसिया के स्टार्नस और एसोस का राजा था, अरस्तू को अपने दरबार में आमंत्रित किया। वहाँ, समान विचार वाले मित्रों औरा सहयोगियों के साथ, अरस्तू ने वैज्ञानिक अनुसंधान किया। 343 ई.पू. में, अरस्तू को मकदूनिया के दरबार में फिलिप के पुत्र सिकंदर के निजी शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए बुलाया गया, जिसकी उस समय तेरह वर्ष की आयु थी। अरस्तू ने अपने अंतिम बारह वर्ष, अपने द्वारा स्थापित 'लाइसियम' नामक विद्यालय में बिताए। ऐसा कहा जाता था कि अरस्तू ने एक असामान्य पुस्तकालय संग्रहित किया जो आगे चलकर अलेक्सांड्रिया के मशहूर पुस्तकालय के लिए आदर्श बना। ऑलस जेलियस (द्वितीय शताब्दी ई. सन् के रोमवासी) ने अरस्तू कैसे पढ़ाता था, इसका वर्णन किया है। सायंकाल के समय, उसने अपने व्याख्यान उन नव युवकों के लिए खोले जिनकी दिलचस्पी थी और ऐसा माना जाता है कि उसने अनौपचारिक तरीके से अलंकार विद्या, वाक्पटुता के संवर्धन

और नागरी शिक्षा पर स्पष्ट रूप से बात की। परन्तु, प्रातः काल में, उसके व्याख्यान उन व्यक्तियों तक सीमित होते थे जिन्हे उसने पर्याप्त रूप से शिक्षित माना, जो सीखने के लिए और परिश्रम करने के लिए आतुर थे और जो प्रकृति की उसकी अधिक सटीक जाँच और द्वंद्वात्मक चर्चा को सुनते थे। ये वह समय था जब उसने नीतिशास्त्र और राजनीति पर अपने विचारों को स्पष्ट किया था। 323 ई. पू. काल में, सिकंदर महान की 32 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई, एथेन्स ने ऐंटीपेटर के साथ युद्ध करने का निश्चय किया। अरस्तू पर अनैतिकता का आरोप लगाया गया और वह एथेन्स को छोड़कर कैल्सिस चला गया, जहाँ उसकी माँ के परिवार की कुछ सम्पत्ति थी। वह एक मुक्त की गई महिला हरपाइलिस के साथ वहाँ गया जिसके साथ, वह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद रहने लगा था और अगले ही वर्ष, 322 ई. पू. काल में उसकी मृत्यु हो गई। वह उस समय 62 या 63 वर्ष का था। अरस्तू ने अनुमानित 200 कृतियाँ लिखीं, इनमें से अधिकांश विवेचन, व्याख्यान विद्या, राजनीति, आचारनीति या नीतिशास्त्र, विज्ञान और मनोविज्ञान पर टिप्पणियों और हस्तलिखित प्रारूपों के रूप में हैं। इनमें संवाद, वैज्ञानिक प्रेक्षण और व्यवस्थित कृतियों के अभिलेख शामिल हैं। उसके विद्यार्थी थियोफ्रेस्टस ने, कथित तौर पर, अरस्तू के लेखों की देखभाल की और आगे चलकर अपने स्वयं के विद्यार्थी नेल्यूस को सौंप दिया, जिसने उन्हें उमस से बचाने के लिए एक तिजोरी में उस समय तक रखा जब तक उन्हें रोम ले जाया गया और वहाँ विद्वानों द्वारा उनका प्रयोग किया गया। अरस्तू की अनुमानित 200 कृतियों में से, केवल 31 अभी प्रचलन में हैं। इनमें से अधिकांश उस समय की हैं, जब अरस्तू लाइसियम में था।

5.2 आकार

अरस्तू ने तर्कसंगत विशेषताओं को अपने अन्वेषण के केंद्र में रखा। अरस्तू का भौतिक जगत के यथार्थ और ज्ञान के एक अनिवार्य उपकरण के रूप में, उसके अध्ययन में प्रबल विश्वास था। उसके अनुसार हमारे ज्ञान का स्त्रोत अवबोधन होता है जो विशेष अनुभूतियों का परिणाम होता है। अनुभूति, ज्ञान की एक महत्वपूर्ण पूर्वशर्त होती है, यद्यपि अनुभूति अपने आप में ज्ञान प्रदान नहीं करती। अरस्तू के लिए अनुभव किन्हीं व्यक्तिगत चीज़ों का ज्ञान है। परन्तु इस ज्ञान के सिद्धांतों या बुनियादों तक पहुँचना या उनका प्रकटित होना अनुभूति के आगमन द्वारा होता है। आगमन व्यक्तिगत प्रकरणों से सामान्य निष्कर्षों तक पहुँचनें के विवेचन की प्रक्रिया होती है। ज्ञान, आगमन और पर्यवेक्षण पर निर्भर करता है। आगमन और पर्यवेक्षण सामान्य रूप से स्वीकृत विचारों को उत्पन्न करते हैं जो भ्रांति के शिकार हो सकते हैं। परन्तु, इन्हीं दृष्टिकोणों के माध्यम से सत्य को प्रकट किया जा सकता है। ज्ञान, मानस के सामान्यीकरण करने की क्षमता से आता है, जो विशेषताओं की उसकी धारणा पर आधारित होता है और ये सामान्यीकरण तब एक प्रकार के तार्किक या तर्कसंगत परीक्षण के अधीन होते हैं। इस प्रकार ज्ञान व्यक्तियों के साथ उस प्रत्यक्ष परिचय की सही व्याख्या पर निर्भर करता है जो दैहिक इंद्रियों द्वारा उपलब्ध किए जाते हैं। यद्यपि दर्शन के बारे में अरस्तू जो कुछ जानता था, वह उसमें प्लेटो से सीखा, फिर भी उसके विचार अपने गुरु के विचारों से इतने अलग थे कि उसने अपनी लेखनी में प्लेटो के अनेक विचारों को प्रत्यक्ष चुनौती दी। अरस्तू अपनी कृति 'मेटाफिज़िक्स' की 'पुस्तक VII' में विशेष रूप से' आकारों के सिद्धांत का उल्लेख करता है जिसे प्लेटो ने अपने ग्रंथ, 'दि रिपब्लिक' में प्रस्तावित किया था। अरस्तू अब 'आकारों' के अपने स्वयं के सिद्धांत का सुझाव देना है, जो प्लेटो के सिद्धांत से काफी अलग है। प्लेटो और अरस्तू दोनों ने यह

स्वीकार किया कि ऐसे दो महत्वपूर्ण तत्व हैं जिनसे सभी विद्यमान वस्तुएँ बनी हुई हैं : आकार है। परन्तु, अस्तित्व पर अरस्तू का विमर्श उसे आकार और पदार्थ के बीच संबंध के बारे में प्लेटो से असहमति की ओर ले गया। यद्यपि प्लेटो और अरस्तू, दोनों आकार को चीजें जो मौजूद हैं, उनके प्रधान अवयव में से एक मानते हैं, फिर भी आकार है क्या, इस बारे में दोनों थे विचार असदृश थे। प्लेटो के 'दि रिपब्लिक' में वाचक सुकरात, अपने अच्छे मित्र ग्लोकॉन के लिए 'अच्छाई के आकार' की "व्याख्या जानी हुई वस्तुओं को जो सत्य प्रदान करता है" के रूप में की। यह संभव है कि वह 'अच्छाई' की अपनी परिभाषा दे रहा हो, परन्तु आगे चलकर वह कहता है, "अच्छाई अस्तित्व नहीं बल्कि अस्तित्व से परे कुछ है, जो ओहदे और शक्ति में उससे बेहतर हैं।" वह अच्छाई के आकार की तुलना सूर्य से करता है, यह कहते हुए कि अच्छाई का आकार "बोध गम्य और स्थान का संप्रभु होना है ठीक वैसा ही जैसा कि सूर्य दृश्यजगत का होता है।" प्लेटो की इस तुल्यरुपता को समझना कठिन है। वह कहता है कि एक ऐसा "बोध गम्य क्षेत्र" है जहाँ न्याय, अच्छाई और सौंदर्य जैसी वस्तुओं के आकारों के बारे में केवल बुद्धि के माध्यम से कल्पना की जा सकती हैं। प्लेटो के अनुसार पृथ्वी पर इन वस्तुओं के निरूपण बोधगम्य जगत में सर्वोत्तम आकारों के केवल दुर्बल प्रतिबिंब होते हैं। उसका विश्वास है कि एक दार्शनिक का लक्ष्य इन आकारों को जानना और समझना होता हैं। परन्तु, प्लेटो के आकार, मात्र नीतिपरक अवधारणाएँ नहीं हैं। वह इस पर भी ध्यान देता है कि रेखागणित के विद्यार्थी "दृष्टिगोचर आकारों का प्रयोग करते हैं और उनके बारे में अपने तर्क बनाते है, यद्यपि वे उनके बारे में नहीं, बल्कि उन वस्तुओं के बारे में सोचते हैं जिनकी तरह ये होती हैं। "उदाहरण के लिए, आप एक विकर्ण के साथ एक वर्ग बना सकते हैं और दावा कर सकते हैं कि वह विकर्ण उस वर्ग को आधे में विभाजित करना है, परन्तु आप वास्तव में उसकी बात नहीं कर रहे जिसको आपने चित्रित किया है, आप एक वर्ग या विकर्ण की अवधारणा की चर्चा कर रहे हैं या, जैसे प्लेटो कहेगा, उनके आकारों की। जैसे–जैसे अरस्तू ने व्यवस्थित तरीके से इसका अध्ययन किया कि अस्तित्व होना क्या होता है, उसने ऐसे निष्कर्ष निकाले जिनके कारण उसने प्लेटो के आकारों के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया। अरस्तू हमें यह बनाना हैं कि 'एक वस्तु का अस्तित्व उसकी आवश्यकता या उसके विषय से उत्पन्न होता है जिसे हम पदार्थ कहते हैं। उसका तात्पर्य यह है कि सभी वस्तुओं के पास भौतिक पदार्थ होना चाहिए, जिसमें से उनकी उत्पत्ति होती है। एक कुर्सी लकड़ी से उत्पन्न हो सकती है, जिसके कारण हम उसे "लकड़ी का " या काष्ठीय कहते हैं। परन्तु, किसी भी वस्तु के अस्तित्व में आने के लिए एक और वस्तु का विद्यमान होना अनिवार्य है : आकार। अरस्तू आकार की परिभाषा "बोधगम्य चीजों में जो भी आकार होता है उसे जो कहा जाना चाहिए" के रूप में देता है। उदाहरण के लिए, लकड़ी एक घर का आकार ले सकती है या कॉन्क्रीट फुटपाथ का आकार ले सकती है अथवा एक बीज एक वृक्ष का आकार ले सकता है। अरस्तू का कहना है कि "आकार पैदा नहीं होना और उसका पैदा होना भी नहीं होता"। उसके अनुसार, किसी भी चीज़ के पैदा होने के लिए आकार और पदार्थ, दोनों आवश्यक होते हैं और जब चीजें पैदा होती हैं, वह एक या दूसरे के निर्माण का विषय नहीं होता बल्कि उन्हें मिलाना होता है। उदाहरण के लिए चमड़े को सही आकार में ढ़ालने में एक जूते का निर्माण हो सकता है परन्तु जूता बनाने वाला न तो चमड़ा बनाता है और न ही जूते का आकार। जूता बनाने वाला अस्तित्व के इन दोनों तत्वों को केवल मिलाता है।

आकार और जड़ द्रव्य पदार्थों की भूमिकाओं पर सोच–विचार ने अरस्तू को यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया कि क्या जड़ द्रव्य पदार्थ से हटकर, आकार जैसी कोई चीज़ हो सकती है। प्लेटो के विपरीत, अरस्तू का कहना है कि ऐसा नहीं हो सकता। यह उसका तरीका है, यह कहने के लिए कि बिना जड़ द्रव्य पदार्थ के आकार का अस्तित्व असंभव होता है क्योंकि किसी भी चीज़ के पैदा होने के लिए दोनों का होना अनिवार्य है। बिना किन्हीं भी मौजूदा मेजों के एक मेज़ का कोई आकार नहीं हो सकता। एक मेज़ की चर्चा, उसकी सामग्री से हटकर की जा सकती है, परन्तु "वह एक वस्तु और कोई निश्चित चीज़ नहीं होती।" अर्थात् वह यथार्थ में एक मेज़ नहीं होती। आगे बढ़ते हुए, अरस्तू कहना है कि यह विदित है अतः कि आकार, विशेषताओं से अलग वस्तुओं के अर्थ में, कारणों के रूप में व्यर्थ होते हैं, कम से कम पैदा होने की दृष्टि से और तत्व की दृष्टि से, बहरहाल, यह भूमिका इन आकारों का अपने आप में तत्व होने का कोई कारण नहीं होती। अरस्तू ने प्लेटो, दोनों के तर्क का ध्यानपूर्वक विचार यह दर्शाता है कि दोनों एक दूसरे का अनिवार्य रूप से विरोध नहीं करते। अरस्तू ने प्लेटो के विचारों का यह कहते हुए खंडन किया कि बिना पदार्थ के आकार "कुछ निश्चित" नहीं हो सकते; वे वास्तव में भौतिक रूप में विद्यमान नहीं हो सकते। प्लेटो ने कभी दावा नहीं किया था यद्यपि कि आकार कोई "निश्चित" वस्तुएँ होती हैं। बल्कि, उसने यह विशेष रूप से कहा कि आकारों का "बोधगम्य क्षेत्र" में निवास होता है। यदि हम प्लेटो के बोधगम्य क्षेत्र को कोई ऐसा समानांतर विश्व न मानें जिसमें सभी चीज़ों के सर्वोत्तम आकारों का निवास होता है, बल्कि हमारे स्वयं के मतों और विचारों का क्षेत्र माने, तो एक प्रकार से, दोनों दार्शनिक सही हैं। जैसा अरस्तू ने कहा कि बिना जड़ द्रव्य पदार्थ के आकार का अस्तित्व नहीं हो सकता। "ईटों से अलग कोई घर" नहीं हो सकता। फिर भी, वस्तुओ के बारे में विचारों को सोचा जा सकता है और उनकी चर्चा की जा सकती है क्योंकि हमारे पास वस्तुओं और विचारों के आकारों के बारे में एक परस्पर समझ होती है। प्लेटो का शायद यही असली तात्पर्य था जब उसने आकारों का वर्णन किया। रेखागणित के विद्यार्थी पूर्ण रूप से समान भुजाओं और समकोण वाले वर्गों की चर्चा कर सकते है, भले ही वे एक उत्तम वर्ग न खींच पाते हों, क्योंकि वे सभी, एक वर्ग के आकार को समझते हैं।

प्लेटो और अरस्तू, दोनों वस्तुओं में आकारों की प्रकृति के संबंध में सुविचारित तर्क प्रस्तुत करते हैं। यह शायद अपरिहार्य था कि अरस्तू ने अपने लेखों में प्लेटो के विचारों का खंडन किया, क्योंकि सभी विज्ञानों की भांति, दर्शन ज्ञान की खोज में पिछली मान्यताओं को निरंतर चुनौती देने की प्रक्रिया होती है। पहली नज़र में यह स्पष्ट नहीं होता कि प्लेटो और अरस्तू के तर्क सच्चे अर्थों में परस्पर विरोधी नहीं है, विशेष रूप से जब अरस्तू इतनी स्वेच्छा से और खुले रूप में प्लेटों के सिद्धांत की निंदा करता है। फिर भी, ऐसा अक्सर होता है कि दो विरोधी दृष्टिकोणों के होने पर, उत्तम समाधान, दोनों का किसी प्रकार का सम्मिश्रण होता है, और यह आकारों के प्रश्न के लिए भी सही हो सकता है। यद्यपि यह सच है कि भौतिक जगत में बिना जड़ द्रव्य पदार्थ के आकारों का अस्तित्व नहीं होता, फिर भी, भौतिक जगत में पाए जाने वाली वस्तुओं की उत्तम अवधारणाओं के रूप में आकारों के बारे में समझ होना हमारे ईद–गिर्द के विश्व को समझने और उसके बारे में चर्चा करने के लिए आवश्यक हो सकता है।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) 'आकारों' को समझने में प्लेटो और अरस्तू के बीच मूल अंतर क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 सद्‌गुण

सद्‌गुण के बारे में अरस्तू के विचारों को उसकी दो कृतियों में पाया जा सकता है : 'दि निकोमेकियन एथिक्स' और 'दि यूडेमियन एथिक्स'। 'यूडेमियन' और 'निकोमेकियन' शब्द बाद में जोड़े गए, शायद इसलिए क्योंकि यूडेमियन का संपादन उसके मित्र, यूडेमस द्वारा ओर निकोमेकियन उसके पुत्र निकोमेकस द्वारा किया गया था। ऐसी विस्तृत धारणा है कि 'दि निकोमेकियन एथिक्स', 'दि यूडेमियन एथिक्स' का परवर्ती और उन्नत रूपांतर है। अरस्तू की अच्छाई की खोज, सर्वोच्य अच्छाई के लिए खोज है और उसका मानना है कि वह जैसी भी निकले, सर्वोच्य अच्छाई की तीन विशेषताएँ होती हैं : वह अपने खुद के लिए वांछनीय होती है, वह किसी अन्य अच्छाई की खातिर वांछनीय नहीं होती और सभी अन्य वस्तुएँ उसकी खातिर वांछनीय होती हैं। अरस्तू के अनुसार, यदि बुद्धि का अच्छा प्रयोग करें, तो हम मनुष्यों के रूप में अच्छा जीवन जीते हैं। कुछ भी अच्छी तरह से करने के लिए सद्‌गुण या उत्कृष्टता की आवश्यकता होती है और इस प्रकार अच्छी तरह से जीने का अर्थ वे गतिविधियाँ हैं जो तर्कसंगत आत्मा द्वारा सद्‌गुण या उत्कृष्टता के अनुकूल की जाती हैं। अच्छी तरह जीना कुछ करने में अंतर्विष्ट होता है, न कि सिर्फ एक विशेष स्थिति या परिस्थिति में होना। यह उन आजीवन गतिविधियों को करने में होता है जो आत्मा के तर्कसंगत हिस्से के सद्‌गुणों को यथार्थ बनाते हैं। साथ ही, अरस्तू यह स्पष्ट करता है कि प्रसन्न रहने के लिए, एक व्यक्ति के पास अन्य पदार्थ भी होने चाहिए–मित्र, सम्पत्ति और सत्ता जैसे पदार्थ। अरस्तू के लिए, एक व्यक्ति की खुशी जोखिम में पड़ जाती है यदि उसके पास कुछ निश्चित सुविधाओं का घोर अभाव हो – जैसे, उदाहरण के लिए, यदि कोई अत्यधिक कुरूप हो अथवा मृत्यु के द्वारा अपनी संतान या अच्छे मित्र खो चुका हो। फिर भी अरस्तू यह आग्रह करता है कि सर्वोच्य अच्छाई, सद्‌गुणी गतिविधि ऐसी वस्तु नहीं है जो संयोगवश मिलती है। यद्यपि हमे इतना भाग्यवान होना चाहिए कि हमारे पास माता–पिता और साथी नागरिक हो जो हमे सद्‌गुणी बनने में मदद करते हों, परन्तु अंत में, हम स्वयं ही सद्‌गणों को प्राप्त करने और प्रयोग करने की अधिकांश जिम्मेदारी निभाते हैं।

अरस्तू दो प्रकार के सद्‌गुणों को अलग करता है : वे जिनका (मन या बुद्धि के सद्‌गुण) और वे जो आत्मा के उस हिस्से से जुड़ते हैं जो अपने आप तर्क नहीं कर पाता फिर भी तर्क अनुसरण की क्षमता रखना है (नीतिपरक सद्‌गुण, चरित्र के सद्‌गुण) बौद्धिक सद्‌गुणों का विभाजन दो प्रकार से होता है : वे सैद्धांतिक विवेचन से संबंधित होते हैं और वे जो व्यावहारिक चिंतन से संबंधित होते हैं।

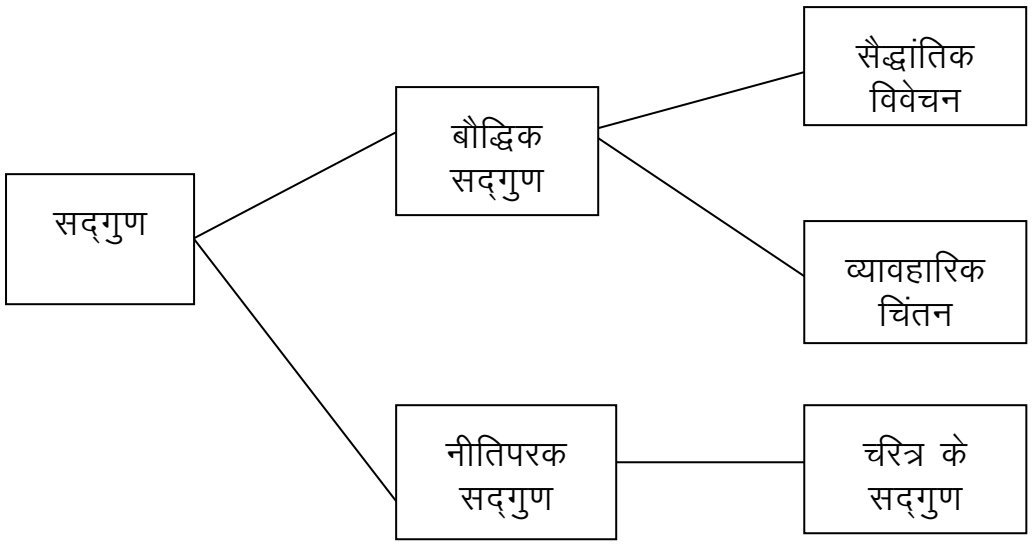

अरस्तू दावा करता है कि सद्गुण कारीगरी और ज्ञान की अन्य शाखाओं से इस प्रकार अलग होते हैं कि सद्गुणों के लिए समुचित भावात्मक प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता होती है और ये पूर्ण रूप से बौद्धिक अवस्थाएँ नहीं होती है। इसी प्रकार, प्रत्येक नीतिपरक सद्गुण दो अन्य स्थितियों के बीचों बीच की अवस्था (एक 'गोल्डन मीन' या सुनहरा मध्यमार्ग जैसा कि आम तौर से जाना जाता है) होती है, एक में अति होती है और दूसरे में अभाव होता है। आगे अरस्तू कहता हैं कि सद्गुण तकनीकी कौशल से भिन्न नहीं होते : प्रत्येक कुशल मज़दूर अति और अभाव से बचाव करना जानता है और दो अतिवादी स्थितियों के बीचों बीच एक संतुलन लाना है। उदाहरण के लिए, एक साहसी व्यक्ति फैसला लेता है कि कुछ खतरे सामना करने के लायक हैं और अन्य नहीं हैं और डर का उस सीमा तक अनुभव करता है जो उसकी परिस्थितियों के लिए समुचित हैं। साहसी व्यक्ति की स्थिति, एक कायर व्यक्ति (जो हर खतरे से भागता है और अत्यधिक डर का अनुभव करता है) और एक उतावला व्यक्ति (जो हर खतरे का सामना करने के लायक मानता है और बहुत कम मात्रा में डर या किसी डर का अनुभव नहीं करता है) के बीच की होती है। अरस्तू दावा करता है कि यही स्थान वर्णन प्रत्येक नीतिपरक सद्गुण पर लागू होता है : सभी एक ऐसे मानचित्र पर स्थित होते हैं जो सद्गुणों को अति और अभाव की स्थितियों के बीच बिठाता है। परन्तु, अरस्तू इस तथ्य पर बल देता है कि अतियों और अभाव के बीच संतुलन या मध्यमार्ग को पाना उस विशेष संदर्भ पर निर्भर करता है जिसमें एक व्यक्ति स्थित होता है। इसे करने का कोई वैश्विक तरीका नहीं है। किसी स्थिति में मध्यमार्ग का पता लगाना एक मशीनी या लापरवाह प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसके लिए परिस्थितियों से पूर्ण और विस्तृत परिचय की आवश्यकता होती है। उसका सिद्धांत सद्गुण की प्रकृति को स्पष्ट करता है, परन्तु अरस्तू यह स्पष्ट करता है कि कुछ भावनाएँ (नीचता, निर्जज्जता, ईर्ष्या) और क्रियाएँ (परगमन, चोरी, हत्या) हमेशा गलत होती हैं, परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों।

व्यावहारिक निवेचन के लिए प्रारंभिक बिंदु : व्यावहारिक विवेचन हमेशा यह मानता है कि एक व्यक्ति का कोई साध्य, कोई लक्ष्य होता है जिसे पाने का वह प्रयत्न करता है; विवेचन का कार्य यह तय करना होता है कि उस लक्ष्य तक कैसे पहुँचना है। यह ध्यान में रखा

जाना चाहिए कि व्यावहारिक विवेचन तभी सही होता है जब यह एक सही आधार से शुरू होता है। फिर वह क्या चीज़ है जो इसके प्रारंभिक बिंदु की विशुद्धता का आश्वासन देती है? अरस्तू उत्तर देता है; "सद्‌गुण लक्ष्य को सही बनाता है और व्यावहारिक ज्ञान उन चीज़ों को, जो उस तक ले जाती हैं।" एक अच्छा व्यक्ति अर्थपूर्ण ठोस साध्यों से शुरूआत करता है क्योंकि उसकी आदतें और भावात्मक रूझान ने उसे यह जानने की क्षमता दी होती है कि ऐसे लक्ष्य, यहीं और इसी वक्त, पहुँच के भीतर है। जिनका चरित्र त्रुटिपूर्ण होता है, उनके पास अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक तर्कसंगत कौशल हो सकता है – वह कौशल जिसे अरस्तू ने होशियारी का नाम दिया है, परन्तु अक्सर वे जिन साध्यों की खोज करते हैं, वे बेकार होते हैं। इस अभाव का कारण तर्क करने की उनकी क्षमता में किसी कमी में नहीं होता बल्कि उनके जुनून के प्रशिक्षण में होता हैं। अरस्तू यह तर्क देता है कि सबसे सुखद प्रकार का जीवन एक दार्शनिक का होता है, एक ऐसा व्यक्ति जो एक लम्बी अवधि के लिए सैद्धांतिक विवके के सद्‌गुण का प्रयोग करता है और ऐसा करने के लिए उसके पास पर्याप्त संसाधन होते हैं। उसके द्वारा यह सोचने के पीछे कि दार्शनिक का जीवन दूसरे–सर्वश्रेष्ठ प्रकार के जीवन से श्रेष्ठ है–एक राजनेता का जीवन, ऐसा कोई जो अपने को सैद्धांतिक विवके के स्थान पर व्यावहारिक विवके के प्रयोग के प्रति समर्पित करता है –एक कारण यह है कि इसके लिए बाहरी उपकरण की कम आवश्यकता होती है। नैतिक सद्‌गुण की सबसे भव्य अभिव्यक्ति के लिए महान् राजनीतिक शक्ति की आवश्यकता होती है क्योंकि वह राजनेता ही होता है जो समुदाय के लिए अधिकतम भलाई करने की स्थिति में होता है। वह व्यक्ति जो एक राजनीतिक जीवन जीने का चयन करता है और जो व्यावहारिक ज्ञान की पूर्ण अभिव्यक्ति को लक्षित करता है, उसके पास यह तय करने के लिए एक मापदंड़ होता है कि उसे किस स्तर के संसाधनों की आवश्यकता है : उसके पास पर्याप्त मात्रा में मित्र, सम्पत्ति और सम्मान होना चाहिए ताकि वह अपने व्यावहारिक ज्ञान को बिना किसी रूकावट के व्यक्त कर सके। परन्तु, यदि कोई व्यक्ति इसके स्थान पर एक दार्शनिक के जीवन का चयन करना है तो वह एक भिन्न मापदंड़ की ओर देखेगा –सैद्धांतिक ज्ञान की पूर्ण अभिव्यक्ति –और उसे इन संसाधनों की कम आपूर्ति की आवश्यकता होगी। यदि कोई व्यक्ति एक दार्शनिक के जीवन को चुनता है, तो उसे अपने संसाधनों का स्तर इतना ऊँचा रखना होगा कि उसे ऐसे जीवन के लिए आवश्यक अवकाश प्राप्त हो, परन्तु वह स्तर इतना ऊँचा भी नहीं होना चाहिए कि उसके बाहरी उपकरण अच्छी तरह जीने के लिए एक सहायक बनने के स्थान पर एक भार और बाधा न बन जाए। कुछ विशेष परिस्थितियों में दार्शनिक को यह निर्धारित करने की आवश्यकता होगी कि न्याय कहाँ है, समझदारी से व्यय कैसे किया जाए, एक खतरे का कब सामना करना चाहिए और कब उसे टालना चाहिए इत्यादि। नैतिक की जीवन की सभी सामान्य समस्याएँ बनी रहती हैं और उनका समाधान केवल प्रत्येक स्थिति की विशेषताओं के विस्तृत ज्ञान के माध्यम से संभव होता है। दर्शन को अपना अंतिम लक्ष्य बनाने का अर्थ व्यावहारिक ज्ञान और नैतिक सद्‌गुणों की विकसित और प्रयोग करने की आवश्यकता का अंत नहीं होता।

अरस्तू का मानना है कि बौद्धिक सद्‌गुण विरासत और शिक्षा द्वारा प्राप्त किए जाने प्राप्त किए जाते हैं जबकि नैतिक सद्‌गुण व्यवहार और अभ्यास के द्वारा। अरस्तू के अनुसार बौद्धिक चिंतन सर्वोच्य सद्‌गुण होता है। इसके अतिरिक्त, अरस्तू बारह सद्‌गुणों का उल्लेख करता है और वे निम्नलिखित हैं :

- साहस – वीरता और पराक्रम (कायरता और उतावलेपन के बीच का मध्यमार्ग)
- संयम – आत्मनियंत्रण और निग्रह (अनभिज्ञता और अतिसेवन के बीच का मध्यमार्ग)
- उदारता (कंजूसी और फिजूलखर्ची के बीच का मध्यमार्ग)
- विशालहृदयता (तुच्छता और अभद्रता के बीच का मध्यमार्ग)
- आत्मगौरव – आत्मविश्वास (कातरता और अहंकार के बीच का मध्यमार्ग)
- उचित महत्वाकांक्षा (कम–महत्वाकांक्षा और अति–महत्वाकांक्षा के बीच का मध्यमार्ग)
- प्रसन्नचित – धीरज, संतुलित (भावशून्यता और चिड़चिड़ेपन के बीच का मध्यमार्ग)
- मैत्रीपूर्णता और मित्रता – एक ओर प्रफुल्लता और मिलन – सरिता और दूसरी ओर सरवापन और संगति (रूखापन और चापलूसी के बीच का मध्यमार्ग)
- सत्यवादिता – स्पष्टवादिता,निष्कपटता और निर्मलता (झूठी विनम्रता और डींग मारने के बीच का मध्यमार्ग)
- वाक्पटुता – विनोद–वृत्ति – निरर्थकता और हास्यास्पद (हास्यहीनता और मसखरेपन के बीच का मध्यमार्ग)
- उचित शर्म – (बेशर्मी और अत्यधिक शर्म के बीच का मध्यमार्ग)
- न्याय – समदर्शिता, निष्पक्षता, और न्यायसंगति (द्वेष और ईर्ष्या के बीच का मध्यमार्ग)

अरस्तू के सद्गुण के सिद्धांत की कई कारणों से आलोचना की गई है। ग्रोशियस जैसे विद्वानों का मानना है कि अरस्तू द्वारा सूचीबद्ध किए गए अनेक सद्गुण नितांत अवगुणों के बीच के मध्यमार्ग का अनुसरण नही कर रहे हैं। कांट जैसे चिंतकों के लिए नैतिक सिद्धांतों के बिना दुष्प्रयुक्त सद्गुण अवगुण बन जाते हैं। जे.एस.मिल जैसे दार्शनिकों के लिए नैतिकता का संबंध कार्यों को आंकना होता है और चरित्रिक लक्षणों को नहीं। इन सभी आलोचनाओं के बावजूद, सद्गुणों पर अरस्तू की परिकल्पना सभी काल के राजनीतिक सिद्धांतकारों के लिए संदर्भ बिंदु है।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) अरस्तू द्वारा निर्धारित किए गए दो मुख्य प्रकार के सद्गुणों को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) एक आदर्श पोलिस (आदर्श राज्य) में अरस्तू द्वारा बल दिए गए व्यक्ति के बारह सद्‌गुणों का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 राज्य तथा अच्छा जीवन

अरस्तू के लिए, राज्य व्यक्तियों का एक समुदाय है। प्रत्येक समुदाय का एक निश्चित लक्ष्य होता है और वह लक्ष्य अच्छाई होती है। एक समुदाय के रूप में, राज्य का एक लक्ष्य होता है और वह लक्ष्य भी अच्छाई है। फिर भी, राज्य एक साधारण समुदाय नहीं है। यह सभी समुदायों मं प्रधान है और यह स्वाभाविक है कि इसका लक्ष्य भी परम या उच्चतम होना चाहिए। एक सर्वोच्य संघ होने के नाते, सामाजिक संरचना में राज्य को सर्वोच्य स्थान प्राप्त है।

एक जीव वैज्ञानिक हाने के नाते, अरस्तू ने राज्य को एक प्राकृतिक जीवित प्राणी के रूप में देखा जिसके अनेक छोटे हिस्से/इकाइयाँ हैं। अरस्तू के लिए राज्य का अस्तित्व स्वाभाविक हैं। वह कहता है कि राज्य की विशेषता प्राकृतिक विकास है। परन्तु, उसकी प्रगति की विभिन्न अवस्थाओं के दौरान, मानव–निर्मित कानूनों और परम्पराओं ने हस्तक्षेप किया है। अरस्तू का मानना है कि एक समुददाय के रूप में राज्य में राज्य के विकास में कानूनों और परिपाटियों ने एक सकारात्मक भूमिका निभाई। कानून और परिपाटियाँ मूल रूप से अच्छे होते हैं और मनुष्य ने उनका निर्माण उनके कल्याणकारी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया है। इन कानूनों और परिपाटियों ने राज्य के कामकाज को सुगम और समृद्ध किया है।

अपने प्राकृतिक विकास में, राज्य ने विभिन्न अवस्थाएँ देखी। अरस्तू के लिए, राज्य की प्रथम अवस्था गृहस्थी है। पुरूष और स्त्री के बीच मिलन परिवार का आधार बनना है। ऐसे ही, पुरूष और स्त्री के बीच मिलन प्रजनन के लिए महत्वपूर्ण होता है क्योंकि प्रत्येक, दूसरे के बिना, शक्तिहीन होता है। यह पसन्द की बात नहीं होती। यह प्रकृति द्वारा प्रत्यारोपित इच्छा का परिणाम होता है और यह इच्छा सभी प्राणियों में पाई जाती है। परिवार में अन्य अवयव भी शामिल होते हैं जैसे दास, बैल और हल। इन अवयवों के बिना एक परिवार अपने स्वयं के भौतिक अस्तित्व को कायम नहीं रख सकता। अरस्तू की परिभाषा में, "प्राकृतिक नियम के अनुसार स्थापित किया गया और दिन प्रतिदिन चलने वाला व्यक्तियों का यह संघ ही गृहस्थी है। "गृहस्थी संघ का मौलिक रूप है और सभी आवश्यकताएँ की पूर्ति करती है। परन्तु मनुष्य की अनेक आवश्यकताएँ होती है" और जाहिर है कि उन माँगों की पूर्ति करना परिवार की क्षमता के बाहर होता है।

अनेक परिवार एक साथ आते हैं और बृहतर मांगों और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक ग्राम का निर्माण करते हैं। यह आमतौर पर स्वाभाविक रूप से अस्तित्व में आता है। यद्यपि ग्राम परिवार से ऊँचा होता है, फिर भी वह अपने सदस्यों की बढ़ती माँगों का सामना नहीं कर पाता। जब अनेक ग्राम साथ आते है, वे एक पोलिस या राज्य का निर्माण

करते हैं। अतः अरस्तू कहता है, "अनेक ग्रामों से निर्मित अंतिम संघ ही राज्य या नगर होता है। वास्तव में, अब प्रक्रिया पूरी हो जाती है। आत्मनिर्भरता प्राप्त हो चुकी है और इस कारण से, जहाँ इसका प्रांरभ स्वयं जीवन को सुरक्षित करने के साधन के रूप में हुआ था, वहीं अब वह अच्छे जीवन को सुरक्षित करने की स्थिति में है।" अरस्तू लिखता है कि जीवन को सुरक्षित करने के अलावा उसका एक बृहत्तर लक्ष्य भी है अर्थात् एक अच्छे जीवन को सुरक्षित करना। अच्छे जीवन को सुरक्षित करना व्यक्ति और समुदाय दोनों का अंतिम उद्देश्य होता है। राज्य संघ का एक सर्वोत्तम स्वाभाविक रूप है, ठीक उसी प्रकार जैसे कि इससे पहले के संघ, जिनमें से इसका विकास हुआ, स्वाभाविक थे। संघ की यह अंतिम अवस्था उन अन्य संघों का भी साध्य होता है और इसकी प्रकृति अपने आप में एक साध्य है। एकमात्र राज्य ही मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, वही एकमात्र आत्मनिर्भर होता है। गृहस्थी और ग्राम आत्मनिर्भर नहीं होते। वे मनुष्य की आवश्यकताओं के एक अंशमात्र की पूर्ति कर पाते हैं। इस बात की चर्चा पहले ही कर चुके हैं कि अरस्तू के अनुसार, अच्छे जीवन की खातिर, नैतिक और बौद्धिक सद्‌गुणों, दोनों का प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है और नैतिक जीवन के लिए बाहरी वस्तुओं की पर्याप्त मात्रा में सुलभता की आवश्यकता होती है। केवल वही राज्य जिसका पर्याप्त आकार हो और जिसके पास आवश्यक जनसंख्या हो, बाहरी वस्तुओं की अबाध पूर्ति की गारंटी दे सकता है। अरस्तू की परिकल्पना में मनुष्य अच्छे जीवन की प्राप्ति के लिए अपनी शारीरिक या भौतिक माँगों की पूर्ति का प्रयास करता है। राज्य के अलावा, कोई भी अन्य संस्था या समुदाय अपर्याप्त होता है। अतः राज्य की सदस्यता अनिवार्य होती है।

अरस्तू का कहना है कि मनुष्य स्वभाव से एक राजनीतिक प्राणी होता है। राजनीतिक प्राणी शब्द का अर्थ एक ऐसा प्राणी है जो राज्य या 'पोलिस' में रहता है। प्रकृति ने मनुष्य को राज्य का एक हिस्सा बनने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया है। अरस्तू का मानना है कि मनुष्य के लिए राज्य के बाहर रहना संभव नहीं था। वह केवल राज्य है जो उसकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यदि अपरिहार्य दुर्भाग्य के कारण एक व्यक्ति पोलिस की सदस्यता प्राप्त करने में असफल होता है तो वह उप–मनुष्य के स्तर तक नीचे पहुँच जाएगा। दूसरी ओर, यदि कोई राज्य में रहने से इनकार कर दे तो उसे एक सुपरमैन (अतिमानव)। देवता माना जा सकता है। एक राज्य में रहना मनुष्य की मौलिक प्रकृति होती है। अरस्तू यह घोषणा करता है कि प्रकृति बिना उद्देश्य के कुछ नहीं करती और मनुष्य को एक राजनीतिक प्राणी बनाने के उद्देश्य से उसने सभी प्राणियों में से केवल उसे ही सुविवेचित भाषण की शक्ति और अन्य अच्छे गुणों का उपहार दिया हैं। राजनीतिक प्राणी शब्द का परिणाम यह है कि मनुष्य तर्कशील होता है और बुद्धिसंपन्नता की शक्ति के साथ वह अच्छे और बुरे; सही और गलत; न्यायपूर्ण और अन्याय के बीच भेद कर सकता है। अरस्तू के अनुसार, तर्कसंगति उन मामलों में एक सामान्य दृष्टिकोण को साझा करने का आधार है जो एक गृहस्थी या नगर को बनाता है। अन्य प्राणियों से मनुष्य की मौलिक भिन्नता यह है कि मनुष्य के पास चेतना और तर्कसंगति होती है जबकि अन्य प्राणियों के पास ये गुण नहीं होते। ये अनोखे गुण मनुष्य को संगठन का निर्माण करने और साथ ही एक अच्छे जीवन को निभाने में सक्षम बनाते हैं।

अरस्तू के राज्य के सिद्धांत की प्रकृति जैविक है – जिसका अर्थ यह है कि राज्य एक संयोजित समाष्टि है। उसने "समुच्चय" और "समष्टि" के बीच भेद किया है। समुच्चय का अर्थ है कि एक वस्तु के विभिन्न हिस्सों को साथ मिलाकर एक इकाई बनाई जाती है। अपने सहयोग के द्वारा, हिस्से एकता का निर्माण करते हैं। परन्तु "समष्टि" का अर्थ कुछ और होता है। पोलिस या राज्य एक समष्टि होता है। राज्य के कई हिस्से होते हैं। परन्तु

जब उन्हें इकट्ठा किया जाता है, तब उस एकता का एक भिन्न अर्थ होगा। राज्य केवल व्यक्तियों का समुच्चय नहीं है। इसके सदस्य परमाणुकृत व्यक्ति नहीं हैं जो एक दूसरे से केवल इस तथ्य से जुड़े है कि वे एक ही क्षेत्र में हैं। जब व्यक्ति एक समष्टि का निर्माण करते हैं तो वे एक संयुक्त गतिविधि को साझा करते हैं और समानांतर रूप से अपने अलगाव को खो देते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि अरस्तू के लिए, यदि हिस्सों को समष्टि से अलग कर दिया जाए तो वे बेकार हो जाएँगे। यही राज्य का जैविक सिद्धांत है। अरस्तू ने कहा है कि पोलिस या राज्य की, गृहस्थी पर, और किसी भी व्यक्ति पर वरीयता होती है। क्योंकि समष्टि को हिस्सों से पहले होना चाहिए। हाथ या पाँव को पूरे शरीर से अलग करने पर वे हाथ या पाँव को पूरे शरीर से अलग करने पर वे हाथ या पाँव नही रहेंगे। केवल राज्य की सदस्यता मनुष्य को आत्म–निर्भर बनाती है और उसे अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने में और साथ ही नैतिक और सद्‌गुणी होने में सहायता करती है। यद्यपि मनुष्य समष्टि का एक हिस्सा होता है, फिर भी समष्टि से उसका वही संबंध होगा जो अन्य हिस्सों का होता है। यह संकेत देता है कि व्यक्ति अपनी पृथक पहचान को अक्षुण रख पाएगा। राज्य में व्यक्ति विभिन्न कार्य करेंगे परन्तु ये कार्य पूरक होंगे। इस दावे के द्वारा कि पोलिस की सदस्यता व्यक्ति और समूह की पृथक पहचान को नष्ट नहीं करती। अरस्तू ने राज्य को बनाने वाले हिस्सों की बहुलता को मान्यता दी है। अरस्तू के अनुसार व्यक्ति नैतिकता और अच्छाई को केवल राज्य की सदस्यता और उसके प्रति अधीनता के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। उसके राज्य से हटकर या राज्य के विरुद्ध अधिकार और स्वतंत्रताएँ नहीं हो सकतीं। यद्यपि राज्य में विलीन नहीं होता, फिर भी वह अपने नैतिक और नीतिपरक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पूर्ण रूप से राज्य पर निर्भर होता है। अरस्तू का मत है कि राज्य की सदस्यता के बिना व्यक्तियों के ऊँचे आदर्श अधूरे रह जाएँगें।

कई अन्य दार्शनिकों के समान, अरस्तू ने आत्म–रक्षा को मनुष्य द्वारा उच्चतर, विशेष रूप से राज्य के निर्माण के लिए राजी होने का कारण माना। निजी संरक्षण के संबंध में समझौते का प्रश्न ही नहीं उठता। परन्तु, यदि व्यक्ति का उद्देश्य सामान्य भलाई की प्राप्ति में पोलिस की मदद करना है, तो राज्य के मत का हमेशा प्रभुत्व होगा और व्यक्ति को राज्य के प्रति समर्पण करना होगा। आत्मरक्षा को छोड़कर अन्य सभी उद्देश्यों के लिए, राज्य में सम्मिलित सामान्य भलाई की खातिर, व्यक्ति को अपना त्याग करना होगा। अरस्तू यूनानी दर्शन में सन्निहित है, जो समुदाय को हमेशा एक संमष्टि के रूप में देखता हैं। व्यक्ति के दृष्टिकोण को राज्य के दृष्टिकोण के ऊपर वरीयता नहीं मिल सकती है।

अरस्तू के लिए, राज्य का उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को उदात्त और सुखी बनाना होता है। यही सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। परन्तु राज्य को भी अपने नागरिकों की सुरक्षा और सार्वजनिक कल्याण की देखभाल करनी चाहिए। अरस्तू के अनुसार, एक सच्चा राज्य, व्यक्ति की बाहरी और आंतरिक क्रियाओं के बारे में चिंतित होता है। यदि राज्य अपने आपको केवल बाहरी क्रियाओं में व्यस्त रखे तो वह अपने आधे कार्य ही कर पाएगा। अरस्तू ने शिक्षा पर बल दिया है। मनुष्यों को अच्छा बनाने अथवा उन्हें सद्‌गुणों में प्रशिक्षण देने का सबसे शक्तिशाली हथियार होता है। राज्य द्वारा स्थापित की गई संस्थाओं द्वारा शिक्षा दी जा सकती है। इस बिंदु पर, अरस्तू और प्लेटो के बीच सामान्य समझ है। संस्थाओं का उद्देश्य मनुष्यों को अच्छाई, बौद्धिकता, नैतिक और शारीरिक उत्कृष्टता के लिए प्रशिक्षण देना संस्थाओं का उद्देश्य होना चाहिए। राज्य को नागरिकों की पाठशाला

होना चाहिए। अरस्तू के सिद्धांत में राज्य एक सुधार गृह है। चूंकि राज्य सर्वोच्च संगठन होता है, उसे सभी व्यक्तियों के हितों को एक संतुलित तरीके से देखभाल करने का अधिकार होता है जो कोई अन्य संघ या संस्था नहीं कर सकती। अरस्तू के लिए, अच्छा जीवन राज्य द्वारा तब सुनिश्चित किया जाता है जब व्यक्ति की विशिष्टता और उसकी परिस्थितियों के अनुसार नैतिक व्यवहारों को चुना जा सकता है। राज्य, अच्छे जीवन के लिए चयन को सुसाध्य बनाता है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशेष होता है। अरस्तू के लिए, राजनीतिक हस्ती, अर्थात् राज्य, अच्छे जीवन के लिए एक पूर्वशर्त होती है। मानव उत्कृष्टता होती है। मानव उत्कृष्टता को केवल एक राज्य के सही बाध्यताकारी नियमों और न्यायपूर्ण कानूनों के संरक्षण में ही प्राप्त किया जा सकता है। राज्य का प्राथमिक कार्य चरित्र निर्माण होता है क्योंकि मनुष्य चरित्रों के साथ पैदा नहीं होता, बल्कि एक निश्चित संदर्भ में उन्हें प्राप्त करता है। सांस्कृतिक नियम, उचित शैक्षणिक प्रशिक्षण और राज्य के सही कानून मनुष्यों को अच्छा चरित्र विकसित करने में सहायता करते हैं। ऐसी स्थिति में, मनुष्यों को ज्ञान होता हे कि वे निश्चित परिस्थितियों में जो चयन करते हैं, वो क्यों करते हैं। अरस्तू के लिए अच्छा जीवन तीन स्तरों पर होता है। ये हैं आनंद का जीवन, सम्मान/सद्गुण का जीवन और चिंतन का जीवन। आनंद का जीवन जनता द्वारा खोजा जाता है। सम्मान/सद्गुण का जीवन सत्तारूढ़ व्यक्तियों द्वारा खोजा जाता है। चिंतन का जीवन बहुत कम व्यक्तियों द्वारा चयन किया जाता है, वे जो आनंद और सम्मान में जीवन की अपूर्णता को समझते है। ये जीवन के बारे में अधिक सोचते हैं। ये जीवन को तत्कालिक परिस्थितियों से परे समझने का प्रयास करते हैं। इसके लिए तर्कबुद्धि एक प्राथमिक आवश्यकता होती है। अतः आदर्श रूप में, मनुष्यों के लिए अच्छा जीवन पौष्टिकता और विकास के बारे में नहीं होता (पौधे भी इसे करते हैं)। अच्छा जीवन सचेतनता के बारे में भी नहीं होता (घोड़े और अन्य जानवर भी इसे करते हैं)। अच्छा जीवन तर्कसंगति के बारे में होता है, चिंतन की क्षमता के बारे में। अरस्तू के लिए, आत्मा और शरीर अवियोज्य होते है। मनुष्य आत्मा की उत्कृष्टता का प्रयोग तर्कसंगति के साथ, चिंतन के लिए करते हैं, किसी दी गई परिस्थिति में जीने का विकल्प चुनने के लिए करते हैं (इसे जानवर और बालक नहीं कर पाते) यहाँ, अपने सद्गुण का प्रयोग करने की क्षमता, केवल उस सद्गुण से संपन्न होने से अधिक महत्वपूर्ण होती है। अतः, अरस्तू के लिए, अच्छे जीवन को परिभाषित करने के लिए आत्मा और शरीर एक साथ कार्य करते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) अरस्तू के राज्य की जैविक प्रकृति को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 अरस्तू के राज्य तथा अच्छे जीवन की आलोचना

अरस्तू के राज्य तथा अच्छे जीवन की आलोचना व्यक्ति और अन्य सभी संघों को राज्य के अधीन समाविष्ट करने के कारण अरस्तू के राज्य के सिद्धांत की आलोचना की गई है। उसके राज्य को एक सर्वाधिकारवादी राज्य के रूप में देखा गया है। अरस्तू की दृष्टि में, व्यक्ति द्वारा अपने तरीके से सोचने और स्वतंत्रतापूर्वक कुछ करने के लिए शायद ही कोई गुंजाइश होती है।

अरस्तू के अनुसार, राज्य सर्वव्यापी होता है। और व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए कोई गुंजाइश नहीं रहने देता। राज्य और व्यक्ति, दोनों की नैतिकता, नीतिपरकता और आदर्शवाद अवियोज्य और एक समान होते हैं। चूंकि राज्य सर्वोच्य संघ होता है, वह सहायता करने और व्यक्ति जिन नैतिक और आदर्श मूल्यों की आकांक्षा रखता है, उनकी पुष्टि करने की जिम्मेदारी को स्वीकार करने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम होता है। अतः व्यक्ति को राज्य के अधीन होना चाहिए, न कि राज्य व्यक्ति के। यदि इसके विपरीत को स्वीकार किया जाए तो सर्वोच्य संगठन के रूप में राज्य की सत्ता को चुनौती दी जाएगी और राज्य का अनस्तित्व, लक्ष्यों की अपूर्ति का संकेत देगा। पुनः, यह भी अस्वीकार्य होता है। अतः, व्यक्ति की राज्य के प्रति अधीनता अनिवार्य होता है।

इस प्रकार से व्यक्ति की राज्य के प्रति अधीनता – जिसका वर्णन सर्वाधिकारवादी, सत्तावादी या पितृसुलभ के रूप में भी किया जा सकता है – निःसंदेह, अरस्तू द्वारा सुझाया गया है। उसका मानना है कि लोग सुखी रहना चाहते हैं और उनकी खुशी अधिकतम होनी चाहिए। यह तभी संभव हो सकता है जब राज्य विधिनिर्माण और संपूर्ण शैक्षणिक प्रणाली के नियंत्रण के लिए कदम उठाता है। इसका अर्थ है, राज्य द्वारा प्रवर्तित कानून ही सुख की प्राप्ति के एकमात्र हथियार होते है। राज्य ही सभी उधमों का एकमात्र प्रधिकारी होता है और व्यक्ति के पास कोई विकल्प नहीं होता। अधीनता के सिवाय कोई विकल्प नहीं होता।

राज्य के जैविक सिद्धांत की उसकी अवधारणा सर्वाधिकारवाद का एक प्रबल संकेत भी है। एक जानवर के शरीर में, समाष्टि से हटकर, हिस्सों का कोई महत्व नहीं होता। यद्यपि यह सच है, फिर भी व्यक्ति और राज्य के बीच संबंध के लिए यह सच नहीं हो सकता। राज्य व्यक्ति के लिए निःसंदेह अनिवार्य होता है, परन्तु वह उसके जीवन के सभी पहलुओं को अंगीकार करने का दावा नहीं कर सकता है। राज्य मनुष्य की माँगों के एक हिस्से को पूरा कर सकता है, परन्तु सभी माँगों को नहीं। संपूर्ण संतुष्टि और खुशी के लिए व्यक्ति विभिन्न संगठनों की सदस्यता ढूँढता है। अरस्तू का राज्य इसे सहन नहीं कर सकता। यह पूरी तरह से समझ से बाहर है कि एक राजनीतिक संघ अपने सभी निवासियों को अकेले ही नैतिक, नीति–परक और आदर्श कैसे बना सकता है। यह भौतिक दृष्टि से असंभव और नैतिक दृष्टि से अनर्तकसंगत होता है। कोई भी व्यक्ति या संगठन, सभी व्यक्तियों की पूर्ण अभिभावकता को अपना नहीं सकता है। अरस्तू का पोलिस एक संघ नहीं, समुदाय होता है, क्योंकि इसे लोग इसी की खातिर सम्मान करते हैं और केवल पृथक व्यक्तिगत साध्यों की पूर्ति के एक साधन के रूप में नहीं। यदि यही अरस्तू के पोलिस की प्रकृति होती है तो व्यक्ति राज्य के भीतर कोई सम्मानजनक स्थान नहीं मिलता। राज्य को किसी भी रूप में चुनौती को व्यक्तियों की ओर से असंमति के रूप में देखा जाता है। व्यक्ति की तर्कसंगति को राज्य के प्रति, बिना शर्त के आत्मसमर्पण के बराबर माना जाता है।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) क्या आपकी राय में अरस्तू के राज्य की प्रकृति सर्वाधिकारवादी है ? अपने उत्तर को सिद्ध करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

सारी आलोचना के बावजूद, इस तथ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि अरस्तू का राज्य जीवन को सुरिक्षित रखने के लिए अस्तित्व में आया और अच्छे जीवन को सुनिश्चित करने के लिए मौजूद रहता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि अरस्तू का राज्य केवल एक समाज नहीं है, जिसमें आपसी अपराध की रोकथाम के लिए और विनिमय के लिए एक सामान्य स्थान स्थापित हो। ये वो शर्तें है जिनके बिना एक राज्य का अस्तित्व नहीं हो सकता; परन्तु ये सब मिलकर एक राज्य का निर्माण नहीं करते, जो एक परिपूर्ण और आत्मनिर्भर जीवन के लिए खुशहाली में, परिवारों का समुदाय और परिवारों का समूह होता है। ऐसे समुदाय की स्थापना केवल उन लोगों के बीच हो सकती है जो एक ही स्थान पर रहते हों और अंतर्विवाह करते हों। अतः, नगरों में पारिवारिक संबंध भाई चारे, सामान्य बलिदान, मनोरंजन उत्पन्न होते हैं जो व्यक्तियों को परस्पर जोड़ते हैं। परन्तु ये दोस्तियों द्वारा निर्मित होते हैं क्योंकि एक साथ रहने का चुनाव करना दोस्ती है। राज्य का साध्य अच्छा जीवन होता है। और ये उसकी दिशा में साधन होते हैं। राज्य एक परिपूर्ण और आत्मनिर्भर जीवन में परिवारों और ग्रामों का संघ है, जिससे हमारा तात्पर्य एक सुखी और गौरवपूर्ण जीवन है। अतः, निष्कर्ष यह है कि राजनीतिक समाज का अस्तित्व नेक कार्यों के लिए होता है और एक साथ रहने के लिए नहीं। जो ऐसे समाज के प्रति सर्वाधिक योगदान देते हैं, उनका बृहतर हिस्सा होता है, उन लोगों के मुकाबले में, जो जन्म से कुलीन या धनी होते है। अरस्तू राज्य के सिद्धांत को आनुभाविक जगत में लेकर आया। अरस्तू राज्य की बदलती प्रकृति पर बदलते संदर्भ के प्रभाव को पर्याप्तता से समझ पाया। अगले अध्याय में हम विस्तार से देख पाएँगे कि अरस्तू ने राज्य निर्माणों में भिन्नताओं को उजागर करने के लिए संविधान के वर्गीकरण को किस प्रकार प्रतिपादित किया है।

5.7 कुछ उपयोगी संदर्भ

- स्कोब्ल. ए. एण्ड टी. मेकेन (2007). *पॉलिटिकल फिलॉसफी : एसेंशियल सेलेक्शन्स.* नई दिल्ली. पीयरसन एड्यूकेशन. पृ. 53–64.
- बर्न्स. टी. (2009). 'ऐरिस्टॉटल: डी. बूशे एण्ड पी. केल्फी. (सं.). *पॉलिटिकल थिंकर्स : फ्रॉम सॉक्रेटीज़ टू दि प्रेज़ेंट.* ऑक्सफोर्ड. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 81–99.

- टेलर. सी. (1995). 'पॉलिटिक्स' जे. बार्न्स (सं.). *दि केंब्रिज कम्पैनियन टू ऐरिस्टॉटल.* केंब्रिज. केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 232–258.
- हचिनसन. डी. (1995) 'ऐथिक्स' जे. बार्न्स (सं.). *दि केंब्रिज कम्पैनियन टू ऐक्रिस्टॉटल.* केंब्रिज. केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 195–232.

5.8 अपनी प्रगति जाँचें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 1

1) प्लेटो के विपरीत, अरस्तू का कहना है कि ऐसा नहीं है। यह उसका यह कहने का तरीफा है कि जड़ द्रव्य पदार्थ के बिना आकार का अस्तित्व होना असंभव है, क्योंकि किसी भी वस्तु के होने के लिए दोनों की उपस्थिति अनिवार्य है। बिना किसी मौजूदा मेज़ के, एक मेज़ का कोई भी आकार नहीं हो सकता। एक मेज़ की सामग्री से अलग उसकी चर्चा की जा सकती है किन्तु "यह एक वस्तु नहीं है और न ही निश्चित है।" अर्थात् यह एक वास्तविक मेज़ नहीं है। आगे बढ़ते हुए, अरस्तू कहता है कि इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि विशेष के अलावा वस्तुओं के रूप में समझे जाने वाले आकार, किसी भी होने की और पदार्थों के कारणों के रूप में बेकार हैं, किसी भी तरह से, यह भूमिका इन आकारों के अपने सही अर्थ में पदार्थ होने का कोई कारण नहीं है। प्लेटो के बिना आनुभाविक आधारों (विशेष अनुभव) और जड़ द्रव्य पदार्थों के आकारों को "अनुपयोगी" कहते हुए अस्वीकार कर दिया।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 2

1) अरस्तू दो प्रकार के सद्गुणों को अलग करता है : वे जो आत्मा के उस हिस्से से जुड़े होते हैं जो विवेचन में जुटा होता है (मन या बुद्धि के सद्गुण) और वे जो आत्मा के उस हिस्से से जुड़ने हैं जो स्वयं तर्क नहीं कर पाता है परन्तु इसके बावजूद विवेक (नैतिक सद्गुण, चरित्र के सद्गुण) का अनुसरण करने में सक्षम होता है। परिणामस्वरूप, बौद्धिक सद्गुणों का विभाजन दो प्रकार से होता है: वे जिनका संबंध सैद्धांतिक विवेचन से होता है, और वे जो व्यावहारिक चिंतन से जुड़े होते हैं।
2) साहस, संयम, उदारता, विशाल हृदयता, आत्मगौरव, उचित महत्वाकांक्षा, प्रसन्न चित्त, मैत्रीपूर्णता और मित्रता, सत्यवादिता, वाक्पटुता, उचित शर्म, और न्याय।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 3

1) अरस्तू के लिए, राजनीतिक समुदाय की मूल इकाई का निर्माण तब होता है जब दास और बच्चों सहित, एक पुरूष और स्त्री एक परिवार का निर्माण करते हैं। परिवार साथ मिलकर ग्रामों का निर्माण करते हैं। फिर ग्राम साथ मिलकर एक राज्य का निर्माण करते हैं। हिस्से (व्यक्ति, परिवार और ग्राम) पूरे (राज्य) के अधीन होते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 4

1) (क) राज्य की और व्यक्ति की नैतिकता, नीतिपरकता और आदर्शवाद अविभाज्य और समान होते हैं।

(ख) राज्य–नियंत्रित शिक्षा और राज्य द्वारा प्रवर्तित कानून ही सुख की प्राप्ति के एकमात्र हथियार होते हैं।

(ग) यह बिल्कुल समझ से बाहर है कि एक राजनीतिक संघ किस प्रकार अपने सभी निवासियों को अकेले ही नैतिक, सदाचारी और आदर्श बना सकता है। यह भौतिक दृष्टि से असंभव और नैतिक दृष्टि से अनुचित, दोनों हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY